

سُورَةُ صَ

Surah 38 — Saad (The letter Saad) • Meccan • 88 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ صَ وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ

सआद नसीहत करने वाले कुरान की कसम (तुम बरहक़ नबी हो)

2

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ

मगर ये कुफ़्फ़ार (स्वाहमस्वाह) तकबुर और अदावत में (पड़े अंधे हो रहे हैं)

3

كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوا وَعَلَىٰ حِينٍ مِّنَاصٍ

हमने उन से पहले कितने गिरोह हलाक कर डाले तो (अज़ाब के वक्त) ये लोग चीख उठे मगर छुटकारे का वक्त ही न रहा था

4

وَعَجِبُوا أَن جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكُفْرُونَ هَذَا سِحْرٌ كَذَّابٌ

और उन लोगों ने इस बात से ताज्जुब किया कि उन्हीं में का (अज़ाबे खुदा से) एक डरानेवाला (पैग़म्बर) उनके पास आया और काफ़िर लोग कहने लगे कि ये तो बड़ा (खिलाड़ी) जादूगर और पक्का झूठा है

5

أَجْعَلِ آلَ اللَّهِ إِلَهًا وَحِدًا إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عَجَابٌ

भला (देखो तो) उसने तमाम माबूदों को (मटियामेट करके बस) एक ही माबूद कायम रखा ये तो यक़ीनी बड़ी ताज्जुब खेज़ बात है

6

وَأَنطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا وَأَصْبِرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ

और उनमें से चन्द खादार लोग (मजलिस व अज़ा से) ये (कह कर) चल खड़े हुए कि (यहाँ से) चल दो और अपने माबूदों की इबादत पर जमे रहो यक़ीनन इसमें (उसकी) कुछ ज़ाती गरज़ है

7

مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي الْمِلَّةِ الْآخِرَةِ إِنْ هَذَا إِلَّا اخْتِلَاقٌ

हम लोगों ने तो ये बात पिछले दीन में कभी सुनी भी नहीं हो न हो ये उसकी मन गढ़ंत है

8

أَنْزَلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ؟ بَيْنَنَا؟ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ؟ مَنْ ذِكْرِي؟ بَلْ لَمَّا يَذُوقُوا؟
عَذَابِ

क्या हम सब लोगों में बस (मोहम्मद ही क़ाबिल था कि) उस पर कुरान नाज़िल हुआ, नहीं बात ये है कि इनके (सिरे से) मेरे कलाम ही में शक है कि मेरा है या नहीं बल्कि असल ये है कि इन लोगों ने अभी तक अज़ाब के मज़े नहीं चखे

9

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ

(इस वजह से ये शरारत है) (ऐ रसूल) तुम्हारे ज़बरदस्त फ़य्याज़ परवरदिगार के रहमत के खज़ाने इनके पास हैं

10

أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا؟ فَلْيَرْتَقُوا؟ فِي الْأَسْبَابِ

या सारे आसमान व ज़मीन और उन दोनों के दरमियान की सलतनत इन्हीं की खास है तब इनको चाहिए कि रास्ते या सीढ़ियाँ लगाकर (आसमान पर) चढ़ जाएँ और इन्तेज़ाम करें

11

جُنْدٌ؟ مَا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ؟ مِنَ الْأَحْزَابِ

(ऐ रसूल उन पैगम्बरों के साथ झगड़ने वाले) गिरोहों में से यहाँ तुम्हारे मुक़ाबले में भी एक लश्कर है जो शिकस्त खाएगा

12

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ؟ وَعَادٌ؟ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَارِ

उनसे पहले नूह की क़ौम और आद और फिरऔन मेंखों वाला

13

وَتَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ؟ وَأَصْحَابُ لَيْكَةِ؟ أَوْ لَيْكَةِ الْأَحْزَابِ

और समूद और लूत की क़ौम और जंगल के रहने वाले (क़ौम शुऐब ये सब पैगम्बरों को) झुठला चुकी हैं यही वह गिरोह है

إِنْ كُلُّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابُ

(जो शिकस्त खा चुके) सब ही ने तो पैग़म्बरों को झूठलाया तो हमारा अज़ाब ठीक आ नाज़िल हुआ

وَمَا يَنْظُرُ هَؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً ۚ وَحِدَةً ۚ مَا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۚ

और ये (काफिर) लोग बस एक चिंघाड़ (सूर के मुन्तज़िर हैं जो फिर उन्हें) चश्में ज़दन की मोहलत न देगी

وَقَالُوا ۚ رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِطْنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ

और ये लोग (मज़ाक से) कहते हैं कि परवरदिगार हिसाब के दिन (क़यामत के) क़बल ही (जो) हमारी किस्मत को लिखा (हो) हमें जल्दी दे दे

أَصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُودَ ۖ ذَا الْأَيْدِ ۚ إِنَّهُ ۚ أَوَّابٌ

(ऐ रसूल) जैसी जैसी बातें ये लोग करते हैं उन पर सब्र करो और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो जो बड़े कूवत वाले थे

إِنَّا سَخَرْنَا الْأَجْبَالَ مَعَهُ ۚ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ

बेशक वह हमारी बारगाह में बड़े रूजू करने वाले थे हमने पहाड़ों को भी ताबेदार बना दिया था कि उनके साथ सुबह और शाम (खुदा की) तस्बीह करते थे

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۚ ۚ كُلُّ ۚ لَهُ ۚ أَوَّابٌ ۚ

और परिन्दे भी (यादे खुदा के वक्त सिमट) आते और उनके फरमाबरदार थे

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ ۚ وَءَاتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصَّلَ الْخِطَابِ

और हमने उनकी सल्तनत को मज़बूत कर दिया और हमने उनको हिक्मत और बहस के फैसले की कूवत अता फरमायी थी

ۚ وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ ۚ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا ۚ الْمِحْرَابَ

(ऐ रसूल) क्या तुम तक उन दावेदारों की भी ख़बर पहुँची है कि जब वह हुजरे (इबादत) की दीवार फाँद पड़े

إِذْ دَخَلُوا ۚ عَلَىٰ دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ ۚ قَالُوا ۚ لَا تَخَفْ ۚ خَصِمَانِ بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ فَاحْكُم بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ

(और) जब दाऊद के पास आ खड़े हुए तो वह उनसे डर गए उन लोगों ने कहा कि आप डरें नहीं (हम दोनों) एक मुकद्दमें के फ्रीकैन हैं कि हम में से एक ने दूसरे पर ज्यादाती की है तो आप हमारे दरमियान ठीक-ठीक फैसला कर दीजिए और इन्साफ से ने गुज़रिये और हमें सीधी राह दिखा दीजिए

إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ ۙ تِسْعٌ ۙ وَتِسْعُونَ نَعَجَةً ۙ وَلِيَٰ نَعَجَةً ۙ وَحِدَةً ۙ فَقَالَ أَكْفَلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ

(मुराद ये हैं कि) ये (शख्स) मेरा भाई है और उसके पास निनान्नेवे दुम्बियाँ हैं और मेरे पास सिर्फ एक दुम्बी है उस पर भी ये मुझसे कहता है कि ये दुम्बी भी मुझी को दे दें और बातचीत में मुझ पर सख्ती करता है

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعَجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ ۚ ۙ وَإِنَّ كَثِيرًا ۙ مِّنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ ۚ مَا هُمْ ۚ وَظَنَّ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَنَّهٗ فَأَسْتَغْفَرَ رَبَّهُ ۚ وَخَرَّ رَاكِعًا ۚ وَأَنَابَ ۚ

दाऊद ने (बगैर इसके कि मुदा आलैह से कुछ पूछें) कह दिया कि ये जो तेरी दुम्बी माँग कर अपनी दुम्बियों में मिलाना चाहता है तो ये तुझ पर जुल्म करता है और अक्सर शुरका (की) यकीनन (ये हालत है कि) एक दूसरे पर जुल्म किया करते हैं मगर जिन लोगों ने (सच्चे दिल से) ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए (वह ऐसा नहीं करते) और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं (ये सुनकर दोनों चल दिए) और अब दाऊद ने समझा कि हमने उनका इमितेहान लिया (और वह ना कामयाब रहे) फिर तो अपने परवरदिगार से बख्शिश की दुआ माँगने लगे और सजदे में गिर पड़े और (मेरी) तरफ रूजू की (24) (सजदा)

فَغَفَرْنَا لَهُ ۙ ذَٰلِكَ ۚ ۙ وَإِنَّ لَهُ ۙ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ ۚ

तो हमने उनकी वह ग़लती माफ कर दी और इसमें शक नहीं कि हमारी बारगाह में उनका तक्ररुब और अन्जाम अच्छा हुआ

يَدَاؤُ؟^د إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً[؟] فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ[؟] إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ[؟] شَدِيدٌ^د بِمَا نَسُوا[؟] يَوْمَ الْحِسَابِ

(हमने फरमाया) ऐ दाऊद हमने तुमको ज़मीन में (अपना) नाएब करार दिया तो तुम लोगों के दरमियान बिल्कुल ठीक फैसला किया करो और नफ़सियानी ख्वाहिश की पैरवी न करो बसा ये पीरों तुम्हें खुदा की राह से बहका देगी इसमें शक नहीं कि जो लोग खुदा की राह में भटकते हैं उनकी बड़ी सख्त सज़ा होगी क्योंकि उन लोगों ने हिसाब के दिन (क्रयामत) को भुला दिया

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَطْلًا ۖ ﴿٤﴾ ذَلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ ﴿٥﴾
فَوَيْلٌ ۖ ﴿٦﴾ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۖ ﴿٧﴾ مِنَ النَّارِ

और हमने आसमान और ज़मीन और जो चीज़ें उन दोनों के दरमियान हैं बेकार नहीं पैदा किया ये उन लोगों का ख्याल है जो काफ़िर हो बैठे तो जो लोग दोज़ख के मुनकिर हैं उन पर अफ़सोस है

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ
الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ

क्या जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए उनको हम (उन लोगों के बराबर) कर दें जो रूप ज़मीन में फसाद फैलाया करते हैं या हम परहेज़गारों को मिसल बदकारों के बना दें

كُتِبَ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبْرَكٌ ۚ لَيْدُبُرُوا ۚ ءَايَتِهِ ۚ وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا ۚ الْأَلْبَابِ

(ऐ रसूल) किताब (कुरान) जो हमने तुम्हारे पास नाज़िल की है (बड़ी) बरकत वाली है ताकि लोग इसकी आयतों में ग़ौर करें और ताकि अक्ल वाले नसीहत हासिल करें

وَوَهَبْنَا لِذَاوُودَ سُلَيْمَانَ ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۚ إِنَّهُ ۙ أَوَّابٌ ۝

और हमने दाऊद को सुलेमान (सा बेटा) अता किया (सुलेमान भी) क्या अच्छे बन्दे थे

31

إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصُّفْنَتُ الْجَيَادُ

बेशक वह हमारी तरफ रूजू करने वाले थे इत्तोफाक़न एक दफ़ा तीसरे पहर को खासे के असील घोड़े उनके सामने पेश किए गए

32

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي حَتَّى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ

तो देखने में उलझे के नवाफिल में देर हो गयी जब याद आया तो बोले कि मैंने अपने परवरदिगार की याद पर माल की उलफ़त को तरजीह दी यहाँ तक कि आफ़ताब (मशरिब के) पर्दे में छुप गया

33

رُدُّوْهَا عَلَيَّ ۚ فَطَفِقَ مَسْحًا ۚ بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ

(तो बोले अच्छा) इन घोड़ों को मेरे पास वापस लाओ (जब आए) तो (देर के कफ़ारा में) घोड़ों की टाँगों और गर्दनो पर हाथ फेर (काट) ने लगे

34

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ عَلَى كُرْسِيِّهِ ۚ جَسَدًا ۚ ثُمَّ أَنَابَ

और हमने सुलेमान का इम्तेहान लिया और उनके तख्त पर एक बेजान धड़ लाकर गिरा दिया

35

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا ۚ لَا يَنْزِلُ ۚ بَغْيٍ لِأَحَدٍ ۚ مِّنْ ۚ بَعْدِي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ
الْوَهَّابُ

फिर (सुलेमान ने मेरी तरफ) रूजू की (और) कहा परवरदिगार मुझे बख़्श दे और मुझे वह मुल्क अता फरमा जो मेरे बाद किसी के वास्ते शायॉह न हो इसमें तो शक नहीं कि तू बड़ा बख़्शने वाला है

36

فَسَخَرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ ۚ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ

तो हमने हवा को उनका ताबेए कर दिया कि जहाँ वह पहुँचना चाहते थे उनके हुक्म के मुताबिक़ धीमी चाल चलती थी

37

وَالشَّيْطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ ۚ وَغَوَّاصٍ ۚ

और (इसी तरह) जितने शयातीन (देव) इमारत बनाने वाले और गोता लगाने वाले थे

وَأَخْرَيْنَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ

सबको (ताबेए कर दिया और इसके अलावा) दूसरे देवों को भी जो जंजीरों में जकड़े हुए थे

هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ

ऐ सुलेमान ये हमारी बेहिसाब अता है पस (उसे लोगों को देकर) एहसान करो या (सब) अपने ही पास रखो

وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ

और इसमें शक नहीं कि सुलेमान की हमारी बारगाह में कुर्ब व मज़ेलत और उमदा जगह है

وَأَنذَرُ عَبْدَنَا أَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ

और (ऐ रसूल) हमारे (खास) बन्दे अय्यूब को याद करो जब उन्होंने अपने परवरगार से फरियाद की कि मुझको शैतान ने बहुत अज़ीयत और तकलीफ पहुँचा रखी है

أَرْكُضْ بِرِجْلِكَ هَذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ

तो हमने कहा कि अपने पाँव से (ज़मीन को) ठुकरा दो और चश्मा निकाला तो हमने कहा (ऐ अय्यूब) तुम्हारे नहाने और पीने के वास्ते ये ठण्डा पानी (हाज़िर) है

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُولَى الْأَلْبَابِ

और हमने उनको और उनके लड़के वाले और उनके साथ उतने ही और अपनी खास मेहरबानी से अता किए

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِهِ وَلَا تَحْنُثْ ۖ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۖ نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ

और अक्लमंदों के लिए इबरत व नसीहत (क्रार दी) और हमने कहा ऐ अय्यूब तुम अपने हाथ से सींको का मट्ठा लो (और उससे अपनी बीवी को) मारो अपनी क्रसम में झूठे न बनो हमने कहा अय्यूब को यकीनन साबिर पाया वह क्या अच्छे बन्दे थे

وَأَنذَرُ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ أَوْ إِلَى الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ

बेशक वह हमारी बारगाह में बड़े झुकने वाले थे और (ऐ रसूल) हमारे बन्दों में इब्राहीम और इसहाक और बेशक वह (हमारी बारगाह में) बड़े झुकने वाले थे और (ऐ रसूल) हमारे बन्दों में इबराहीम और इसहाक और याकूब को याद करो जो कुवत और बसीरत वाले थे

إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ۚ ذِكْرَى الدَّارِ

हमने उन लोगों को एक खास सिफत आखेरत की याद से मुमताज़ किया था

وَأِنَّهُمْ عِندَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ

और इसमें शक नहीं कि ये लोग हमारी बारगाह में बरगुज़ीदा और नेक लोगों में हैं

وَأَنذَرُ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۚ وَكُلٌّ مِّنَ الْأَخْيَارِ

और (ऐ रसूल) इस्माईल और अलयसा और जुलकिफल को (भी) याद करो और (ये) सब नेक बन्दों में हैं

هَذَا ذِكْرٌ ۚ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَّآبٍ ۚ

ये एक नसीहत है और इसमें शक नहीं कि परहेज़गारों के लिए (आखेरत में) यक़ीनी अच्छी आरामगाह है

جَنَّاتٍ عِدْنٍ ۚ مُّفْتَحَةٌ ۚ لَهُمْ فِيهَا الْأَبْوَابُ

(यानि) हमेशा रहने के (बेहिश्त के) सदाबहार बागात जिनके दरवाज़े उनके लिए (बराबर) खुले होंगे

مُتَّكِنِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفُكْهَةٍ ۚ كَثِيرَةٍ ۚ وَشَرَابٍ ۚ

और ये लोग वहाँ तकिये लगाए हुए (चैन से बैठे) होंगे वहाँ (खुद्दामे बेहिश्त से) कसरत से मेवे और शराब मँगवाएँगे

ۚ وَعِنْدَهُمْ قُصِرَتُ الْأَطْرَفِ الْأُتْرَابِ

और उनके पहलू में नीची नज़रों वाली (शरमीली) कमसिन बीवियाँ होंगी

53

هَذَا مَا تُوعِدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ

(मोमिनों) ये वह चीज़ हैं जिनका हिसाब के दिन (क़यामत) के लिए तुमसे वायदा किया जाता है

54

إِنَّ هَذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ ۖ مِنْ نَفَادٍ

बेशक ये हमारी (दी हुई) रोज़ी है जो कभी तमाम न होगी

55

هَذَا ۖ وَإِنَّ لِلطَّغِينَ لَشَرَّ مَأْبٍ ۖ

ये परहेज़गारों का (अन्जाम) है और सरकशों का तो यक़ीनी बुरा ठिकाना है

56

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ

जहन्नुम जिसमें उनको जाना पड़ेगा तो वह क्या बुरा ठिकाना है

57

هَذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ ۖ وَغَسَّاقٌ ۖ

ये खौलता हुआ पानी और पीप और इस तरह अनवा अक़साम की दूसरी चीज़ें हैं

58

وَأَخْرُ مِنْ شَكْلِهِ ۖ أَزْوَاجٌ

तो ये लोग उन्हीं पड़े चखा करें (कुछ लोगों के बारे में) बड़ों से कहा जाएगा

59

هَذَا فَوْجٌ ۖ مُّقْتَحِمٌ ۖ مَعَكُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا ۖ بِهِمْ ۖ إِنَّهُمْ صَالُوا ۖ النَّارِ

ये (तुम्हारी चेलों की) फौज भी तुम्हारे साथ ही ढूँसी जाएगी उनका भला न हो ये सब भी दोज़ख़ को जाने वाले हैं

60

قَالُوا ۖ بَلْ أَنْتُمْ لَا مَرْحَبًا ۖ بِكُمْ ۖ أَنْتُمْ قَدَمْتُمُوهُ لَنَا ۖ فَبِئْسَ الْقَرَارُ

तो चले कहेंगे (हम क्यों) बल्कि तुम (जहन्नुमी हो) तुम्हारा ही भला न हो तो तुम ही लोगों ने तो इस (बला) से हमारा सामना करा दिया तो जहन्नुम भी क्या बुरी जगह है

61

قَالُوا ۚ رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ۚ ا ضِعْفًا ۚ ا فِي النَّارِ

(फिर वह) अर्ज करेंगे परवरदिगार जिस शख्स ने हमारा इस (बला) से सामना करा दिया तो तू उस पर हमसे बढ़कर जहन्नुम में दो गुना अज़ाब कर

62

وَقَالُوا ۚ مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رَجَالًا ۚ ا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْأَشْرَارِ

और (फिर) खुद भी कहेंगे हमें क्या हो गया है कि हम जिन लोगों को (दुनिया में) शरीर शुमार करते थे हम उनको यहाँ (दोज़ख़) में नहीं देखते

63

أَتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمْ الْأَبْصَارُ

क्या हम उनसे (नाहक़) मसख़रापन करते थे या उनकी तरफ़ से (हमारी) आँखें पलट गयी हैं

64

إِنَّ ذَلِكَ لَحَقٌّ ۚ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ

इसमें शक नहीं कि जहन्नुमियों का बाहम झगड़ना ये बिल्कुल यक़ीनी ठीक है

65

قُلْ إِنَّمَا أَنَا ۚ ا مُنْذِرٌ ۚ ا وَمَا مِنِّ إِلَهِ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो बस (अज़ाबे खुदा से) डराने वाला हूँ और यकता क़हार खुदा के सिवा कोई माबूद क़ाबिले परसतिश नहीं

66

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفُورُ

सारे आसमान और ज़मीन का और जो चीज़े उन दोनों के दरमियान हैं (सबका) परवरदिगार ग़ालिब बड़ा बख़्शने वाला है

67

قُلْ هُوَ نَبَأٌ ۚ ا عَظِيمٌ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ये (क़यामत) एक बहुत बड़ा वाक़िया है

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ

जिससे तुम लोग (स्वाहमास्वाह) मुँह फेरते हो

مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ ۚ بِالْمَلَأِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ

आलम बाला के रहने वाले (फरिश्ते) जब वाहम बहस करते थे उसकी मुझे भी खबर न थी

إِنْ يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا ۚ نَذِيرٌ ۚ مُّبِينٌ

मेरे पास तो बस वही की गयी है कि मैं (खुदा के अज़ाब से) साफ-साफ डराने वाला हूँ

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَأِكَةِ إِنِّي خَلِقُ ۚ بَشَرًا ۚ مِنْ طِينٍ ۚ

(वह बहस ये थी कि) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तों से कहा कि मैं गीली मिट्टी से एक आदमी बनाने वाला हूँ

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ ۚ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ ۚ سَاجِدِينَ

तो जब मैं उसको दुरुस्त कर लूँ और इसमें अपनी (पैदा) की हुई रूह फूँक दो तो तुम सब के सब उसके सामने सजदे में गिर पड़ना

فَسَجَدَ الْمَلَأِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ

तो सब के सब कुल फरिश्तों ने सजदा किया

إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ اسْتَكْبَرَ ۖ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ

मगर (एक) इबलीस ने कि वह शेखी में आ गया और काफिरों में हो गया

قَالَ يَٰإِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِإِيْدِي ۚ أَسْتَكْبَرْتَ ۖ أَمْ كُنْتَ مِنَ
الْعَالِينَ

खुदा ने (इबलीस से) फरमाया कि ऐ इबलीस जिस चीज़ को मैंने अपनी खास कुदरत से पैदा किया (भला) उसको सज्जदा करने से तुझे किसी ने रोका क्या तूने तक्रबुर किया या वाकई तू बड़े दरजे वालों में है

قَالَ أَنَا ۚ خَيْرٌ مِّنْهُ ۖ خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ ۖ وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ۚ

इबलीस बोल उठा कि मैं उससे बेहतर हूँ तूने मुझे आग से पैदा किया और इसको तूने गीली मिट्टी से पैदा किया

قَالَ فَأَخْرِجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَٰجِيْمٌ ۖ

(कहाँ आग कहाँ मिट्टी) खुदा ने फरमाया कि तू यहाँ से निकल (दूर हो) तू यकीनी मरदूद है

وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ

और तुझ पर रोज़ जज़ा (क़यामत) तक मेरी फिटकार पड़ा करेगी

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ

शैतान ने अर्ज़ की परवरदिगार तू मुझे उस दिन तक की मोहलत अता कर जिसमें सब लोग (दोबारा) उठा खड़े किए जायेंगे

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ

फरमाया तुझे एक वक्त मुअय्यन के दिन तक की मोहलत दी गयी

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ

वह बोला तेरी ही इज्जत व जलाल की क़सम

82

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ

उनमें से तेरे खालिस बन्दों के सिवा सब के सब को ज़रूर गुमराह करूँगा

83

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ

खुदा ने फरमाया तो (हम भी) हक़ बात (कहे देते हैं)

84

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقُّ أَقُولُ

और मैं तो हक़ ही कहा करता हूँ

85

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّن تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ

कि मैं तुझसे और जो लोग तेरी ताबेदारी करेंगे उन सब से जहन्नुम को ज़रूर भरूँगा

86

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो तुमसे न इस (तबलीग़े रिसालत) की मज़दूरी माँगता हूँ और न मैं (झूठ मूठ) बनावट करने वाला हूँ

87

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ ۖ لِلْعَالَمِينَ

ये (कुरान) तो बस सारे जहाँ के लिए नसीहत है

88

وَلِتَعْلَمَنَّ نَبَأُهُ ۖ بَعْدَ حِينٍ ۖ

और कुछ दिनों बाद तुमको इसकी हकीकत मालूम हो जाएगी